सत्य साहित्य

वर्ष 54 / अंक 3
जनवरी-मार्च
2016

मूल्य ₹ 5

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

मेरे सतगुरु तेरी नौकरी, सबसे बढ़िया है सबसे खरी।
तेरे दरबार की हाजरी, सबसे बढ़िया है, सबसे खरी।

(1) खुश नसीबी का जब गुल खिला।
तब कहीं जा के ये दर मिला।
हे गुरु, ये तो रहमत तेरी ... सबसे ...

(2) मैं नहीं था किसी काम का, ले सहारा तेरे नाम का।
अब गुरु उपज तो बिगड़ी मेरी ... सबसे ...

(3) जब से तेरा गुलाम हो गया, तब से मेरा भी नाम हो गया
वरना औकात क्या थी मेरी ... सबसे ...

(4) मेरी तनख्वाह भी कुछ कम नहीं, कुछ मिले न मिले गम नहीं।
ऐसी होगी कहाँ दूसरी .. सबसे ...

(5) इस जिन्दगी दीवाना हूँ मैं, खाक चरणों की चाहता हूँ मैं
प्यार भरी इल्तजा है मेरी .. सबसे ...

- - - - - -

(परम पूज्य महाराज जी की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- नूतन वर्ष की शुभ कामनाएँ
- भक्ति-महत्व
- संक्रान्ति के उपलक्ष्य में
- प्रश्न-उत्तर
- श्री स्वामी जी महाराज के संस्मरण
- अनुभूतियाँ
- बच्चों के लिए
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- कैलेंडर
- उद्देश्य व नियम

सत्य साहित्य

आप नित्य भ्रमण तो करते ही होंगे। खान पान का नियम भी
पालन करना ही चाहिए। नाम-आराधन भी करते रहा करें।
इस में आलस्य प्रमाद करना उचित नहीं होता। चित्त में चिन्ता
की चिंगारी चमकने देनी हानिकर है। मन को प्रसन्न रखना एक
बड़ा कौशल और सुखी रहने का गहरा रहस्य है। अपने
मानस बाग के कुसुमों को कुम्हलाने देना हितकर नहीं होता।

आशा है आप सुख सहित हैं।

आपका मंगलाकांक्षी

सत्यानन्द।

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज का शुभ संदेश एक साधक को पत्र, दिनांक 18.4.1951, के माध्यम से

नूतन वर्ष 2016

विश्वामित्र

पूज्यपाद स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के परिवार के सभी सदस्यों को नव–वर्ष की अतिशय मँगल कामनाएँ। परमेश्वर कृपा करें, मेरे गुरुजन आशीष दें ताकि इस वर्ष में अत्यधिक नाम की, सद्विचारों की, सद्गुणों की एवं सत्कर्मों की पूंजी अर्जित तथा संचित कर सकें।

हमारी साधना में भक्ति की प्रधानता है। भक्ति की पराकाष्ठा है शरणागति अर्थात समर्पण। एक भक्त–कवि के हार्दिक उद्गार अच्छे लगे, अतः प्रस्तुत हैं :–

करुँ समर्पित सारे काम, तुम्हारे चरनन में श्रीराम।

मन हो अर्पित–तन हो अर्पित, वाणी भी हो जाए समर्पित।
सब करमन से मुक्ति पाऊँ, इस जीवन को करुँ समर्पित।।

करमन से यदि मुक्ति पाऊँ, फल को फिर क्यों कर ललचाऊँ।
मन को मेरे प्रभु दो विश्राम, करुँ समर्पित सारे काम।।

तन से यदि मैं मुक्ति पाऊँ, कामी क्यों कर मैं कहलाऊँ।
तन को मेरे करो निष्काम, करुँ समर्पित सारे काम।।

मन को प्रभु करो तुम निर्मल, वाणी को अमृत रस देकर।
सहज बने मन मेरा निश्छल, पाऊँ मैं प्रभु चारों धाम।।

करुँ समर्पित सारे काम, तुम्हारे चरनन में श्रीराम।

"हे राम ! तेरे अनुग्रह से हमारा सकल जीवन भक्तिमय हो जाए, तेरे श्री चरणों में समर्पित हो जाए"। समर्पित साधक को अनायास ही प्रभु राम का अनुग्रह प्राप्त हो जाता है। जिसे अनुग्रह प्राप्त, उसका नवग्रह क्या बिगाड़ सकेंगे ? जीवन में सहज ही निश्चिन्तता एवं शान्ति लाभ हो जाती है।

नववर्ष के शुभारम्भ पर आप सबको, आप सबके नौकर की लख–लख बधाई।

(वर्ष 2005 के आगमन पर दिया गया संदेश) ■

भक्ति-महत्व

भक्ति शुभ की राशि है। भक्ति भगवान में श्रद्धा, सुविश्वास से पैदा होती है। अपरा भक्ति तो साधारण, पर आन्तरिक भक्ति, संशय रहित अनन्य निश्चय के साथ जुड़ी हुई है। अनन्य निश्चय यह है कि एक वह ही है। राम पर पूरे भाव से निर्भर होना जैसे समर्थ रामदास, तुकाराम, रामानन्द, तुलसीदास। जैसे बच्चा माँ पर निर्भर और किश्ती पर बैठा नाव पर निर्भर होता है। गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि ऐसे जो लोग मुझ में जुड़े हुए, मिले हुए होते हैं, उनके योग क्षेम मैं स्वयं चलाता हूँ। परा–भक्ति, हम राम–नाम से भक्ति कहते हैं। कोई खुदा नाम से कहे, उससे हमारा कोई झगड़ा नहीं व विवाद नहीं। पर पानी कह कर आग डालने की कोशिश नहीं होनी चाहिए।

हम अपने राम नाम, जिससे भक्ति प्रार्थना करते हैं, उससे हमारी बड़ी प्रीति है। हम समझते हैं कि परम–पद से हमें प्राप्त हुआ है। सत्य कर्म, जन सेवा, दूसरे का हित करना ये भी सब भक्ति में सम्मिलित हैं। केवल माला फेरना ही भक्ति नहीं है। भगवान के मन्दिर तो बहुत हैं, विस्तार से कहें तो शुभ कर्म जितने हैं, वे सब भक्ति का भाग हैं। राम–नाम की लहर चली है–जो जितनी जन सेवा करता है, उतना ही उसका राम पूजन होता है।

पंडित लोग वर्णन किया करते हैं, उनकी बातों में नहीं जाना चाहता, पर तुलसीदास जी कहते हैं,"ज्ञान कर्म बिन प्रीति न होए" फिर प्रीतियाँ कई प्रकार से पैदा होती हैं। पारिवारिक सम्बन्ध के कारण भी कर्म किए जाते हैं। प्रीति जबरदस्ती से नहीं होती। लड़के को हाथ पकड़ कर स्कूल छोड़ आना कोई और बात है। शुरु–शुरु में तो बच्चा छुट्टी पसन्द करता है, चाहे मास्टर की माँ भी मर जाए। बाल उपदेश पढ़ने वाला, जब कॉलेज जाने लगता, बाद में वह रोकने से भी नहीं रुकता। उस में प्रीति पैदा हो चुकी होती है। भक्ति के बिना ज्ञान और सुकर्म कठिन। प्रीति से ज्ञान बढ़ता है। पहाड़ में पानी न हो, तो चश्मा नहीं निकलता। सुकर्म भी और भले कर्म भी उनमें होते हैं जो प्रीति वाले हैं। इसको पंडित भाषा में भक्ति कहा जाता है। किसी ने कहा कि वह लड़का माता–पिता का बड़ा प्रेमी है। यह कहना ठीक नहीं। ठीक कहना हो, तो कहना होता है कि यह लड़का माता–पिता का बड़ा भक्त है। पर लड़के की बजाय बाप की बात हो, तो ठीक कहना यही कि वह पुत्र का बड़ा प्रेमी न कि वह पुत्र–भक्त। विषयों से जो प्रीति है, वह प्रेम नहीं कहला सकती। इस प्रकार इष्ट ज्ञान से भक्ति कहलाती है।

भक्ति–भाव में ज्ञान और कर्म दोनों का मेल है। वह मनुष्य नहीं जो सेवा नहीं करता, जो समय पर जाप आराधन नहीं करता। जिसमें देश प्रेम नहीं, सुविश्वास भी नहीं, वह भक्त नहीं। भक्ति ज्ञान से बड़ी है। तुलसीदास जी कहते हैं कि जो ऐसी भक्ति को जान करके भी केवल ज्ञान के लिए परिश्रम करते हैं वे जड़मति वाले कामधेनु को छोड़ कर वन में आक से दूध निकालने जैसी बात करते हैं।■

(प्रवचन पीयूष, पृष्ठ 334-335)

श्री महाराज जी के
श्री मुख वाक्य

गम खाने की चीज़ है,
क्रोध पीने की चीज़ है,
सुख देने की चीज़ है,
दुःख सहने की चीज़ है,
प्रेम करने की चीज़ है,
पाप छोड़ने की चीज़ है।

जहाँ अपेक्षायें होंगी, वहीं अशान्ति होगी

'चरण-शरण में अर्पित'

प्रेम

''जब तेरी बुद्धि मोहमयी दलदल से पार हो जाएगी, तब तू मोह के कीचड़ से पार हो जाएगा, तब तू सुनी हुई और सुनने योग्य बात उपदेश को समझ सकेगा। पराया, पराई मोह में फैंक देता है। शरीर में भावना होना, नाशवान वस्तुओं के साथ प्रीति मोह है। मोह में कर्तव्य तो भूल जाता है। छोटी–छोटी वस्तु हम जानते हैं कि नाशवान है, दौड़ धूप करते हैं, चिन्ता करते हैं, चिन्ता चिता समान है, प्राणों को भी ले जाती है।

जन्म–जन्म से संस्कार हमारे अन्दर बस गए हैं कि मैं देह हूँ, अपने आपको आत्मा मानने वाला कौन है? मैं नाशवान देह नहीं आत्मा हूँ। एक मुनि ने कहा है,''सबसे अभागा मनुष्य वह है जो अपने आपको पहचान नहीं सका, भटकता ही रहा, अपने आपको नहीं समझा। हम कई बार सुनते हैं कि आत्मा शरीर से भिन्न है, अजर है, अमर है, पर जब तक हम मोह के कीचड़ से बाहर नहीं निकलते–हम ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकते।''

सबसे उत्तम साधन राम नाम का आराधन है। अनेकों ऋषि मुनि, भवसागर से पार उतर गए, नाम अनेक हैं, कोई स्वरुप नहीं है। परमेश्वर सब स्वरुपों में विद्यमान है, प्रभु सर्वविद्यमान है, जिसकी कृपा से हमारा जीवन चलता है, सब कुछ चलता है। महाराज जी के वाक्य हैं,''अपने मन को मेरे में स्थापन करे, वह भक्त मुझे प्यारा है। जब तक हम अर्पित न कर दें, जो सबसे उत्तम नाम है, जिसकी कृपा से, आराधना से, अपने आपको सफल बनाया है उसी की कृपा से, उसकी कृपा के पात्र हो सकते हैं। मोह के कीचड़ से बाहर हो सकते हैं, परन्तु अगर नाशवान–संसारी चीज़ों के पीछे भटकते रहे तो जीवन में सफलता प्राप्त करना बहुत कठिन है। यह तो परमेश्वर की कृपा ही समझनी चाहिए जो उसकी चरण शरण मिली।

परमेश्वर सबके लिए समान है और उसके लिए सब समान हैं। यह न समझो कि मैं पापी हूँ। जब हम उसकी शरण में जाते हैं तो वे अपने हृदय से लगा लेता है। कोई चीज़ किसी के पास नहीं, वे सोचते रहते हैं, जो राम नाम का आराधन करने वाला है, वह कहता है कि मेरी माँ मेरे पास है मैं उसी से माँगूंगा।

महाराज (स्वामी जी) के पास कोई चला जाता तो उसके लिए प्रार्थना किया करते थे कि परमेश्वर तू कृपा कर। इसी विश्वास से अगर प्रार्थना करता है, उसी प्रकार मां को अपने पास समझ कर पुकार करता है, माँ सुनती है और कामना पूरी कर देती है। किसी के लिए अन्याय न माँगें। जब कोई माँग पूरी हो जाए तो विश्वास बढ़ जाता है। माँ को नमस्कार करके धन्यवाद किया करते। जो कोई परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, मैं इस योग्य भी नहीं तो कृपा और होती है। जब हम परमेश्वर की चरण शरण में जाते हैं मन में कोई कामना नहीं रखनी चाहिए। जिसने अपनी मन, बुद्धि को अर्पित कर दिया उसको किसी चीज़ की जरुरत नहीं होती। सब चीज़ें उसके पास आ जाती हैं। उसका हाथ मेरे सिर पर है फिर किस चीज़ के

लिए व्याकुल होना। जो भक्त होते हैं उन्हें किसी चीज़ की जरुरत नहीं होती। दूसरों के उपकार के लिए तत्पर रहते हैं। जो दूसरों के लिए काम करते हैं प्रभु को वह प्यारे होते हैं। जो परमेश्वर की चरण–शरण में हो जाए, वह स्वयं चिन्ता करेगा। चिन्ता माँ को होती है बच्चे को नहीं। यदि अपने आपको बच्चा समझ कर चरण–शरण में अर्पित कर दें तो विश्वास रखें कि परमेश्वर की कृपा होने लग जाती है उसी प्रकार जैसे स्विच ऑन करने पर बत्ती जल जाती है।

परमेश्वर श्री राम की सब पर कृपा हो, कृपा हो!

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के श्रीमुखारविन्द से, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली 16-6-1968 *सायं* 6 *से* 7.30, *जो परम पूजनीय श्री महाराज जी द्वारा डायरी में नोट किए गए।)* ■

भक्ति अविनाशी सुख

भाग 1

विश्वामित्र

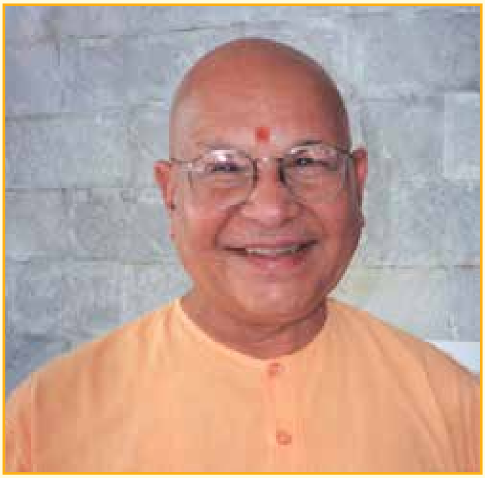

सांसारिक सुख, विषय–सुख तो क्षण भंगुर है। तब उस अविनाशी सुख की प्राप्ति कैसे हो, जिसके लिए यह मानव जन्म मिला हुआ है? भगवान् शिव हलाहल विष पी गए। जब उनसे पूछा गया, किसके बल पर आपने यह विष पीया? समुद्र मंथन से कोई एक आधा ग्राम विष तो नहीं निकला होगा, इतनी भारी मात्र में विष आपने किस बल पर पी लिया? उन्होंने बड़ा स्पष्ट उत्तर दिया बड़े विश्वास के साथ,''मैंने अपने मुख में 'राम' शब्द रखा है उसी के बल पर मैंने यह विष पी लिया। विष को मैंने राम से मिला दिया तो विश्राम हो गया।''

यह प्रश्न तो हमारे सामने भी उठना चाहिए, क्या हमारे मुख में राम नहीं है? हम विष क्यों नहीं पी सकते? हम दुःख क्यों नहीं सह सकते? हमें सुख की अनुभूति क्यों नहीं हो सकती? हम शोक क्यों नहीं सह सकते? क्या बात थी ऐसी, भगवान् शिव भी उसी नाम की उपासना करते हैं जिसकी हम करते हैं। परन्तु वह तो इस विश्वास के बल पर विष भी पी गए अकेले, किसी को हिस्सेदार नहीं बनाया। हमारे ऊपर इतना सा संकट आता है तो हम चाहते हैं कि इस संकट को दूसरे बाँटें, पर भगवान् शिव ने इसको बाँटा नहीं। संकेत दिया दुःख अकेले सहो, सुख बाँट कर सहो। सुख दोगे, तो सुख मिलेगा। बाँटो उसे, जितना बाँटोगे उतना अधिक मिलेगा, यह परख के देखिएगा। क्या बात थी ऐसी? एक शब्द में कहा जाए तो भगवान् शिव को विश्वास का प्रतीक कहा जाता है, माँ पार्वती को श्रद्धा कहा जाता है। इन्हीं दोनों के पुत्र विश्वास और श्रद्धा से उत्पन्न हुए गणेश जी महाराज। दोनों के प्रतीक, बुद्धि के सागर कहा जाता है। एक कथा इस प्रकार की आती है, देवताओं में होड़ लग गई, प्रथम पूजा का अधिकारी कौन है? ऐसी होड़ जैसे हमारे अन्दर है, हम भी तो इसी दौड़ में लगे हुए हैं। प्रथम पूजन का अधिकारी, अधिक से अधिक मान प्राप्ति के अधिकारी, यही तो हमारी दौड़ भी है। किसी भी क्षेत्र में आप देख लीजिएगा। यदि देखा जाए तो यही दौड़ ही लक्ष्य है। मान–सम्मान प्राप्ति की होड़। प्रथम पूजन का अधिकारी कौन है? भगवान् शिव ने एक मापदंड निर्णित कर दिया, जो देवता सारे ब्रह्माण्ड का चक्कर

लगा के, सब से पहले मेरे पास पहुँचेगा, उसी को घोषित कर दिया जाएगा, प्रथम पूजन का अधिकारी। बड़ी मामूली सी बात है, देवताओं के लिए विभिन्न उनके पास वाहन हैं, बड़े तेज़ चलने वाले। ठीक है महाराज, हर कोई अविलम्ब, देरी नहीं की, कुछ सोचा नहीं, कुछ विचारा नहीं, क्योंकि पहले आना है, सबके सब देवता अपने–अपने वाहन पर निकल पड़े हैं। गणेश जी का वाहन, आप जानते ही हैं चूहा है, बेचारा रेंगने वाला। उस पर बैठे, आप शरीर भी गणेश जी का जानते हैं, बहुत पेट निकला, भारी है। हर वक्त लड्डू उनके हाथ में रहते हैं मोटे हैं, परन्तु वाहन बड़ा छोटा है। पिता की आज्ञा का पालन करना है, चलो चलते हैं। यह बेचारे बहुत पीछे हैं, देवी देवताओं की पति पत्नियाँ इत्यादि जो भी उनका परिवार, वह सब उन पर हँसते हैं। हम तो इसे बुद्धि का सागर मानते थे लेकिन यह कितनी मूर्खता की बात कर रहा है। कहाँ यह लोग और कहाँ यह मूषा, कहाँ ले जाएगा ? देवर्षि नारद आगे से आ गए हैं, यह सारा तमाशा देखने के लिए, कौतुक देखने के लिए। देवर्षि नारद को सभी देवी देवता आते हुए देखते हैं लेकिन कोई रुकता नहीं, कोई प्रणाम नहीं करता। कौन इसे मुँह लगाए, बड़ी बातें करने वाला है, इस वक्त समय है नहीं, व्यर्थ खोने कि लिए। यदि एक बात करेंगे तो आगे से यह अनेक बातें करेगा। इसलिए सब नज़र छुपा कर चले जाते हैं। कोई रुकता नहीं। क्यों? पहले पहुँचना है। प्रथम पूजन का अधिकारी बनना है, वही दौड़ जिसकी दौड़ में सारा संसार दौड़ रहा है। वही दौड़ देवी देवता के अन्दर भी है। गणपति महाराज बहुत पीछे हैं। दूर से देखा नारद जी आ रहे हैं, अपने वाहन से उतर गए, साष्टांग प्रणाम किया।

देवर्षि कहते हैं, ''गणपति, तुम तो जानते हो, यह वाहन किस प्रकार का है, सारे देवता जिस दौड़ में लगे हुए हैं, उस दौड़ में आप भी लग गए? यह आपको शोभा नहीं देता।'' हँस पड़े,"देवर्षि, मैं तो उस लक्ष्य से नहीं दौड़ रहा"। गणपति जी महाराज कहते हैं,''जिस लक्ष्य को लेकर वह दौड़ रहे हैं, मैं उस लक्ष्य से नहीं दौड़ रहा।'' जो फल की आशा लेकर नहीं चलता उस को कर्मयोगी कहते हैं। वह संतों महात्माओं का एवं परमात्मा का अतिप्रिय होता है।''देवर्षि मैं फल की आशा लेकर नहीं सफर कर रहा।'' फिर क्या बात है? ''महाराज, देखो न मुझे पता है, मैं खगोल जानता हूँ, सारे ब्रह्माण्ड का। एक–एक चीज़ नापी हुई है मैंने इस ब्रह्माण्ड की, मुझे पता है, मैं चूहे पर सवारी करके इस ब्रह्माण्ड की परिक्रमा नहीं कर पाऊँगा। बहुत समय लगेगा, पर मैं तो इस लक्ष्य को ले कर निकला ही नहीं। मैं तो इस लिए निकला हूँ कि प्रभु की आज्ञा है, पिता श्री की आज्ञा। मुझे पालन करनी चाहिए। इसी बहाने अनेक रास्ते में तीर्थ आएँगे, उनकी यात्रा हो जाएगी और आप जैसे संत महात्मा कोई रास्ते में मिल जाएँगे तो उनके दर्शन हो जाएँगे। उनसे भेंट हो जाएगी। देखो न, कृपा हुई मेरे ऊपर आपके आज अकस्मात दर्शन हो गए।''

> हमारे ऊपर इतना सा संकट आता है तो हम चाहते हैं कि इस संकट को दूसरे बाँटें, पर भगवान् शिव ने इसको बाँटा नहीं। संकेत दिया दुःख अकेले सहो, सुख बाँट कर सहो। सुख दोगे, तो सुख मिलेगा। बाँटो उसे, जितना बाँटोगे उतना अधिक मिलेगा, यह परख के देखिएगा।

देवर्षि नारद गुरु महाराज हैं, अति प्रसन्न हुए,''वाह गणपति, मैं जैसा समझता था तूने वैसा ही उत्तर दिया और वैसा ही किया।'' शाबाशी दी और कहा,''बेटा, अभी राम शब्द यहाँ लिख, उसकी एक परिक्रमा लेकर भगवान् शिव की गोदी में जाकर बैठ जा। कह ऐसे करके मैं आया हूँ, मेरी परिक्रमा पूर्ण हो गई। पूछेंगे कैसे? तो बोलना। इस नश्वर संसार के मूल में कौन है? वही अनश्वर। 'सत्य मूलक है रचना सारी' स्वामी जी महाराज लिखते हैं। इस रचना के पीछे मूल में कौन है? इस सारे संसार के मूल में कौन है? वही राम जिसकी आप चक्कर, परिक्रमा लगा कर जा रहे हो। जाओ, आप ही प्रथम पूजनीय हो, प्रथम पूजा के अधिकारी हो।' गुरु ने युक्ति बता दी, अहिल्या तर गई। प्रश्न उठा कैसे? भगवान् के चरणों से या चरणों की धूलि से। हमें चरणों में और चरण धूलि में कोई अन्तर

नहीं दिखाई देता, परन्तु जो पढ़ने वाले, समझने वाले है, वह प्रश्न करते हैं, अहिल्या तरी किससे? भगवान् के चरणों से या चरणों की धूलि से? धूलि तो जनकपुरी आते–आते भगवान् को मिली, पहले नहीं थी और यदि चरणों से तरी तो क्या अयोध्या में पत्थर नहीं थे क्योंकि कोई कहता तो नहीं है कि अयोध्या में कोई पत्थर तर गया हो। बड़ा भारी प्रश्न चिन्ह है। चरणों से तरी अहिल्या या चरण धूलि से तरी? भगवान् से यह प्रश्न पूछा गया। महाराज आप ही निर्णय कीजिएगा, भगवान् श्री राम बड़ा सुन्दर उत्तर देते हैं, मात्र राम शब्द की रटन करते रहोगे तो वह मेरे चरणों के तुल्य है, उससे कुछ विशेष बात बनने वाली नहीं। जैसे राम शब्द में दो अक्षर, वैसे ही मेरे दो चरण। इनकी रटन मात्र करते रहोगे तो मेरे चरणों से कोई तरने वाला नहीं। इसके साथ धूलि मिल जाएगी, गुरु कृपा हो जाएगी, संत कृपा हो जाएगी, तो मेरे चरणों में अनुराग होने लगेगा। यहाँ फिर एक बात स्पष्ट करता हूँ, पार करने के लिए, तारने के लिए न मेरे चरणों में समर्थ है, न मेरी चरण धूलि में समर्थ है, एक चीज़ और चाहिए, वह क्या है? यदि गुरु विश्वामित्र मुझे आदेश न देते,"राम अपनी चरण धूलि से अहिल्या को तार दो" तो यह काम मैं कभी न कर पाता। नाम के साथ अनुराग, नामी के प्रति अनुराग और फिर उसके ऊपर गुरु कृपा – बड़े भेद की बात है, जब तक गुरु कृपा नहीं होती, तब तक कोई तरता नहीं। गुरु कृपा कैसी है ? आपको जाप करते–करते गुरु देख कर जब थक जाता है, यह थक गया है अब और मैं भी इसे देख कर थक गया हूँ तब वह परमेश्वर से प्रार्थना करता है,"परमात्मा इस भक्त की मैं साक्षी देता हूँ इसने बहुत जप किया है"। तब उसके ऊपर कृपा होती है। ■

(परम पूजनीय श्री महाराज जी का यह लेख आने वाले अंकों में जारी रहेगा।)

(मूलतः 'समन्वय साधना पथ', वर्ष 2004 में प्रकाशित)

संक्रान्ति के उपलक्ष्य में

मकर सक्रांन्ति की बहुत बहुत बधाई – मँगल कामनाएँ, शुभ कामनाएँ। परमात्मा से प्रार्थना करें कि हमारे जीवन में अंधकार मिट जाए, जीवन प्रकाशमय हो जाए।

सूर्यदेव आज मकर राशि में प्रवेश करते हैं उत्तर की ओर मुड़ते हैं overall क्रान्ति, बाहर क्रान्ति और भीतर क्रान्ति का दिन। दक्षिणायन की समाप्ति, उत्तरायण का आरम्भ।

अंधकार की रात्रि छोटी होनी शुरु हो जाएगी, प्रकाशमय दिवस बड़े होने शुरु हो जाएँगे। हमारे जीवन का सत्य भी ऐसा ही होना चाहिए। परमेश्वर से प्रार्थना करें कि हमारे जीवन में अंधकार मिट जाए, जीवन प्रकाशमय हो जाए। दृढ़ संकल्प लेने का दिन–

1. **जीवन को भक्तिमय बनाएँगे।**
2. **जीवन को साधनामय बनाएँगे।**
3. **परमेश्वर का सतत् स्मरण करेंगे।**
4. **शरीर और परिवार की समस्याओं को कभी परमेश्वर को नहीं बताएँगे।**
5. **परमेश्वर ऐसा बल दे जीवन की कठिनाइयों को सहन कर सकूँ। विकारों, दुर्गुणों का दमन कर सकूँ।**

आज का दिवस आत्मिक सूर्य के अवलोकन का दिन। हमारा आत्म–सूर्य विकार के बादलों से आच्छादित रहता है। आज का दिन इन बादलों को छिन्न–भिन्न करने का दिन।

Our lives must be divine, संसारी न रहें दूसरों के लिए सोचें, अपने लिए नहीं। यहीं से अध्यात्म शुरु होता है। दूसरों को सुख सुविधा पहुँचाने वाला व्यक्ति 'आध्यात्मिक' माना जाता है।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी का श्री रामशरणम् दिल्ली में प्रवचन, दिनांक 14-1-11)

‘साधकों की समस्याएँ, परम पूजनीय श्री महाराज जी के समाधान’

(परम पूजनीय श्री महाराज जी के साथ साधकों के पत्राचार के अंश)

प्र. महाराज जी आपके आशीर्वाद का प्रार्थी हूँ।

पूजनीय महाराज जी: प्रभु राम आपको नाम–दान, संतोष–दान और फलस्वरुप शांति एवं परमानन्द दें।

प्र. महाराज जी, जाप के समय हमारे विचार क्या होने चाहिए? राम के किस अर्थ का ध्यान करना चाहिए?

पूजनीय महाराज जी: प्यार और श्रद्धा या उसके बगैर भी किए गए राम जाप का, लाभकारी प्रभाव होता है। श्रद्धा बाद में विकसित होती है। कृपया राम मन्त्र का जाप करते रहें। ‘राम’ का अर्थ है भक्ति, वैराग्य और ज्ञान का प्रदाता। परम दयालु और कृपालु परमेश्वर जो कि सर्वशक्तिमान, सर्वव्याप्त एवं सर्वज्ञ है, जो कि पूर्णतः प्रेम, परमानन्द और शान्ति है।

प्र. महाराज जी, कृपया मेरा मार्गदर्शन करें कि व्यक्तिगत समस्याओं से कैसे निपटूँ?

पूजनीय महाराज जी: अनन्य भक्ति ही आपके पिछले कर्मों को जला सकती है जिनके फल बेहद पीड़ादायक होते हैं। ‘उसे’ अपनी एकाग्र भक्ति से प्रसन्न कीजिए। अपने प्रियतम को तीव्रता से प्रेम कीजिए। सिर्फ वही चमत्कार कर सकता है... प्रभु राम भला करें। सप्रेम, जय जय राम।

प्र. मुझे भक्ति का आशीर्वाद दीजिए।

पूजनीय महाराज जी: आपको प्रभु की निःस्वार्थ भक्ति और दूसरों की सेवा करने की शक्ति का आशीर्वाद मिले। सप्रेम, जय जय राम। शुभकामनाएँ।

प्र. महाराज जी, राम नाम जाप के समय मेरा ध्यान भटकता रहता है। मुझे किस का ध्यान करना चाहिए? सगुण राम या निर्गुण राम का ?

पूजनीय महाराज जी: राम नाम एवं उसकी ध्वनि या प्रभु के व्यक्तित्व पर एकाग्रचित्त हो ध्यान करें। नियमित जाप करें। जय जय राम।

प्र. कृपया मेरा मार्गदर्शन करें कि मैं स्वयं को मोह और माया से कैसे बचाऊँ?

पूजनीय महाराज जी: मेरे प्रिय ... सप्रेम जय जय राम। आपका प्रेम भरा ईमेल पढ़कर मुझे कितना आनन्द मिला! प्रभु आपको श्रेष्ठतम श्रद्धा का आशीर्वाद दें जो आपका ‘उससे’ एकाकार कर दे। आपको परमानन्द से भरपूर नव वर्ष की शुभ कामनाएँ।

प्र. महाराज जी, कृपया मुझे हमारे मन्त्र के विषय में बताइए।

पूजनीय महाराज जी: हमारा मन्त्र ‘राम’ है। यह प्रभु का सबसे प्रिय और प्रचलित नाम भी है इस पवित्र मन्त्र के जाप से हम न केवल प्रभु के नाम का सिमरन करते हैं बल्कि गुरु मन्त्र का भी, और एक साथ दोनों के फल को प्राप्त करते हैं। सप्रेम जय जय राम... उससे प्रेम करते रहिए। ■

(परम पूजनीय श्री महाराज जी के उत्तर शब्दशः अनुवादित हैं। प्रश्नकर्ता की गोपनीयता बनाए रखने के लिए प्रश्नों को आवश्यकतानुसार संशोधित किया गया है।)

परम पूजनीय श्री स्वामी जी द्वारा श्री अमृतवाणी की रचना के बारे में

''अब मैं राम के नाम पर आता हूँ। यह तो मेरे रग–रग में बस गया है, मुझमें रमा हुआ है। इस के सम्बन्ध में जो जो मेरी अनुभूतियाँ हैं, जो जो भाव उठते गए, उन्हें लिखता गया। इन्हें मैंने स्वयं अनुभव किया है। नाम की महिमा मेरी अपनी अनुभव की है। इस की प्रत्येक पंक्ति में राम की महिमा बसी हुई है। मुझे इस रचना से बड़ा लाभ हुआ, मैं समझता हूँ जो भी भक्तिपूर्वक पढ़ेगा, उसे भी लाभ होगा। उस पर राम–कृपा होगी। मैं स्वयं इसका पाठ करता हूँ और भाव–मुग्ध हो जाता हूँ। इसकी रचना तो राम की प्रेरणा से हुई। जो इसे पढ़ेगा–उस पर राम कृपा होगी जैसी मुझ पर हुई।''

''फिर कीर्तन की ध्वनि आने लगी। बोलो राम ...श्री राम श्री राम ....। फिर केवल राम राम का जाप होता रहा।''

(एक साधक (गुप्त नाम) ने परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के बारे में अपने संस्मरण सुनाए, जो परम पूजनीय महाराज जी की डॉयरी में दिनांक 11-1-2006 के अन्तर्गत मिले)

अनुभूतियाँ

'सबसे शक्तिशाली सबसे सरल उपाय'

श्री गुरुदेव परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज नाम के अनुसार प्रेम की मूर्ति थे। अथाह प्रेम के सागर थे। सरल स्वभाव, सेवा तथा नम्रता के प्रतीक। श्री महाराज कितने पहुँचे हुए थे सब जानते हैं लेकिन देखने में कितने सरल। श्री महाराज जी बहुत कम बोलते, लेकिन जब भी प्रवचन करते (जो कि बहुत कम होते) ऐसा सुनने को मिलता कि श्री महाराज जी ने हमारे मन की बात कही है। हमारे मन में जो बात थी उसका जवाब मिल जाता। कोई भी अपनी समस्या लेकर या किसी भी कारणवश श्री महाराज जी के पास जाता तो वह कहते राम राम करो। किसी ने बोला,''श्री महाराज हमेशा यही कहते हैं 'राम राम' करो, बाद में पता चलता कि श्री महाराज ने सबसे शक्तिशाली सबसे सरल उपाय बता दिया।'' श्री महाराज जी ने पता ही नहीं लगने दिया कि वे कितने महान हैं।

'आपकी कृपा से सब काम हो रहा है'

मैंने 1999 में बनीखेत में उन दिनों नाम दीक्षा ली जिन दिनों मेरे हालात बहुत खराब थे। रोटी के लाले पड़े हुए थे। तब मुझे ड्राइवर की नौकरी करनी पड़ी। मैं राम नाम जपता और रोज अमृतवाणी का पाठ करता। एक दिन मैं कार लेकर जा रहा था, गाड़ी के ब्रेक फेल हो गए। उसके बावजूद मैं गाड़ी लेकर चलता रहा लगभग पौना कि.मी गाड़ी चलाने के बाद चम्बा से आगे पहाड़ी पर चढ़ कर गाड़ी पलट गई। गाड़ी का हिस्सा मेरी टाँगों पर और बैटरी मेरे कंधों पर गिर गई। मुझे कोई खरोंच नहीं आई उस वक्त आपकी फोटो गुरुदेव मेरी जेब में थी। आपने ही मेरी रक्षा की, मेरे मुँह से निरन्तर राम राम का जाप हो रहा था। उस संकट से आपने मुझे बचाया। मेरा ये जीवन आपका दिया हुआ है। आपकी कृपा से मैंने जिस काम को छोड़ा था आज उसी काम को करके अपना निर्वाह कर रहा हूँ। दो बेटियों की शादी भी कर दी, यह बस राम नाम की महिमा है। घुटनों के दर्द के बावजूद मैं साईकल चला कर सब काम कर रहा हूँ। आपकी कृपा से सब काम हो रहा है–करते हो आप गुरुजी मेरा नाम हो रहा है। ■

शब्द जाल

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज जी के रचित सात ग्रन्थ ढूंढो

र	य	क	ध	अ	मृ	त	वा	णी	क्ष	न
ण	य	रा	तृ	ती	मा	व	च	तु	श	भ
मा	क	ति	प्र	ल	ग	न	प	र्-	ष	क
ल	के	झ	रु	व	त्र	प	द	ल	ज	ति
भ	व	भ	स	ण	च	क्ष	–	स	ह	प्र
क	ता	क	प्र	भ	ज	न	सं	ग्र	ह	का
त	ति	रा	ष	ल	ड	ठ	पी	ट	ब	श
के	प	ण	रा	आ	रु	ध	कि	यू	ह	की
ल	क	मा	गी	म	ई	क	मु	त	ष	ग
क्ष	य	श	रा	ख	ऐ	ण	जु	व्र	ता	च
ण	ऊ	फ	मि	य	स	मा	भ	द	ण	नू
सु	क	वि	भ	ग	व	त्	गी	ता	र्प	लि

अमृतवाणी
भक्त के लक्षण
भगवत् गीता
प्रवचन पीयूष
भजन संग्रह
भक्ति प्रकाश
रामायण

पर शरणागति जो जन चाहे,
तेरा हूँ सुविश्वास दिलाये।

मम प्रण है उसे अपनाना,
शरण में ले निर्भय बनाना।।

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

अक्तूबर से दिसम्बर 2015

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- सिडनी, आस्ट्रेलिया, में 26–27 सितम्बर को खुला सत्संग लगा जिसमें 11 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- हरिद्वार में 30 सितम्बर से 3 अक्तूबर तक परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा। 30 सितम्बर को 25 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- हरिद्वार में 5 से 8 अक्तूबर तक झाबुआ के साधकों के लिए विशेष साधना सत्संग का आयोजन हुआ।
- जम्मू में 9 से 14 अक्तूबर तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 221 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- हरिद्वार में 13 से 22 अक्तूबर तक रामायणी सत्संग लगा।
- रेवाड़ी में 24–25 अक्तूबर को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 59 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- अमृतसर में 1 नवम्बर को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 101 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- पठानकोट में 7–8 नवम्बर को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 158 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- चम्बी, हिमाचल प्रदेश, में 16 नवम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 8 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- तिब्बड़, पंजाब, में 18 नवम्बर को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन हुआ जिसमें 190 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- फाज़लपुर, कपूरथला, पंजाब, में 21–22 नवम्बर को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 61 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- ग्वालियर में 27 से 30 नवम्बर तक साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 341 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- आलमपुर, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश, में 3 दिसम्बर को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 184 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- होशंगाबाद में 25 दिसम्बर 2015 को श्रीरामशरणम में एक दिवसीय सत्संग कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- भोलासा, झाबुआ, में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य अन्तिम चरण पर है और उद्घाटन 10 मार्च 2016, बृहस्पतिवार, को होगा।
- बीकानेर, राजस्थान, में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

अन्य होने वाले विशेष कार्यक्रमों की सूचना

- चित्रकूट, मध्य प्रदेश, में 1 फरवरी को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन होगा जिसके बाद नाम दीक्षा होगी।
- भोपाल में 12 से 14 फरवरी को श्रीरामशरणम् में श्री रामायण जी व गीता जी का अखण्ड पाठ, भजन, कीर्तन व प्रवचन होगा। 14 फरवरी रविवार को प्रातः नाम दीक्षा होगी।
- कोल्हापुर, महाराष्ट्र, में 6 मार्च को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन होगा जिसके उपरान्त नाम दीक्षा होगी।
- नागदा, मध्य प्रदेश, में 9 मार्च को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन होगा जिसके उपरान्त नाम दीक्षा होगी।
- हरदा में 20 मार्च 2016 को श्रीरामशरणम में प्रातः 6 से 12 बजे तक अखण्ड जाप व सायं 3 से 4.30 बजे तक विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन होगा जिसके उपरान्त नाम दीक्षा होगी। ■

वर्ष 2016 में होने वाले साधना-सत्संगों एवं खुले संत्संगों की सूची

साधना सत्संग

इन्दौर	8 से 11 जनवरी	(शुक्र से सोमवार)
हांसी	5 से 8 फरवरी	(शुक्र से सोमवार)
हरिद्वार	13 से 16 मार्च	(रवि से बुधवार)
हरिद्वार	18 से 23 अप्रैल	(सोम से शनिवार)
हरिद्वार (झाबुआ विशेष)	26 से 29 अप्रैल	(मंगल से शुक्रवार)
हरिद्वार	30 जून से 3 जुलाई	(बृहस्पति से रविवार)
हरिद्वार	14 से 19 जुलाई	(बृहस्पति से मंगलवार)
हरिद्वार (रामायणी)	2 से 11 अक्तूबर	(रवि से मंगलवार)
हरिद्वार	11 से 14 नवम्बर	(शुक्र से सोमवार)
ग्वालियर	25 से 28 नवम्बर	(शुक्र से सोमवार)

खुले सत्संग

झाबुआ	3 से 5 जनवरी	(रवि से मंगलवार)
पीलीबंगा	30 से 31 जनवरी	(शनि व रविवार)
बिलासपुर	19 से 21 फरवरी	(शुक्र से रविवार)
सिरसा	27 से 28 फरवरी	(शनि व रविवार)
दिल्ली (होली)	22 से 24 मार्च	(मंगल से बृहस्पतिवार)
झाबुआ (मौन साधना)	7 से 15 अप्रैल	(बृहस्पति से शुक्रवार)
मण्डी	10 अप्रैल	(रविवार)
लम्बासा फीजी	7 से 8 मई	(शनि व रविवार)
सुवा फीजी	14 से 15 मई	(शनि व रविवार)
मनाली	14 से 16 जुन	(मंगल से बृहस्पतिवार)
सेलर्सबर्ग, अमेरिका	23 से 26 जुन	(बृहस्पतिवार से रविवार)
दिल्ली	27 से 29 जुलाई	(बुध से शुक्रवार)
रोहतक	13 से 14 अगस्त	(शनि व रविवार)
रतनगढ़	27 से 28 अगस्त	(शनि व रविवार)
रिवाड़ी	3 से 4 सितम्बर	(शनि व रविवार)
भरेड़ी	11 सितम्बर	(रविवार)
गुरदासपुर	16 से 18 सितम्बर	(शुक्र से रविवार)
सिडनी	24 से 25 सितम्बर	(शनि व रविवार)
जम्मू	14 से 16 अक्तूबर	(शुक्र से रविवार)
पठानकोट	22 से 23 अक्तूबर	(शनि व रविवार)
हिसार	5 से 6 नवम्बर	(शनि व रविवार)
कपूरथला	19 से 20 नवम्बर	(शनि व रविवार)
भिवानी	10 से 11 दिसम्बर	(शनि व रविवार)
सूरत	17 से 18 दिसम्बर	(शनि व रविवार)
सुजानपुर	24 से 25 दिसम्बर	(शनि व रविवार)

श्रीरामशरणम् नई दिल्ली में वर्ष 2016 में नाम दीक्षा की तिथियाँ

17 जनवरी	प्रात: 11:00 बजे	रविवार
20 मार्च	प्रात: 11:00 बजे	रविवार
24 अप्रैल	प्रात: 10:30 बजे	रविवार
22 मई	प्रात: 10:30 बजे	रविवार
19 जुलाई	सांय: 4:00 बजे	मंगलवार
21 अगस्त	प्रात: 10:30 बजे	रविवार
18 सितम्बर	प्रात: 10:30 बजे	रविवार
30 अक्तुबर	प्रात: 10:30 बजे	रविवार
25 दिसम्बर	प्रात: 11:00 बजे	रविवार

वर्ष 2016 में पूर्णिमा की तिथियाँ	
23 जनवरी	शनिवार
22 फरवरी	सोमवार
23 मार्च	बुद्धवार
22 अप्रैल	शुक्रवार
21 मई	शनिवार
20 जून	सोमवार
19 जुलाई	मंगलवार
18 अगस्त	गुरूवार
16 सितम्बर	शुक्रवार
16 अक्तूबर	रविवार
14 नवम्बर	सोमवार
13 दिसम्बर	मंगलवार

अन्य स्थानों में नाम दीक्षा की तिथियाँ जनवरी से जून 2016		
1 जनवरी	शुक्रवार (अपराह्न 1.00बजे)	कुशलगढ़
2 जनवरी	शनिवार (अपराह्न 1.00बजे)	दाहोद
3 जनवरी	रविवार	झाबुआ
8 व 10 जनवरी	शुक्रवार व रविवार	इन्दौर
31 जनवरी	रविवार	पीलीबंगा
1 फरवरी	सोमवार	चित्रकूट
7 फरवरी	रविवार	हाँसी
14 फरवरी	रविवार	भोपाल
21 फरवरी	रविवार	बिलासपुर
28 फरवरी	रविवार	सिरसा
6 मार्च	रविवार	कोल्हापुर
9 मार्च	बुद्धवार	नागदा
10 मार्च	गुरुवार	भोलासा
20 मार्च	रविवार	हरदा
10 अप्रैल	रविवार	मंडी
17 अप्रैल	रविवार	शुक्रताल
7 व 8 मई	शनिवार व रविवार	लम्बासा,फीजी
14 व 15 मई	शनिवार व रविवार	सुवा, फीजी
16 जून	गुरुवार	मनाली
19 जून	रविवार अपराह्न 2.30 बजे	मेरीलैंड, अमेरिका
23 जून	गुरुवार	सेलर्सबर्ग, अमेरिका

'सत्य साहित्य' के उद्देश्य और नियम

उद्देश्य

1. 'सत्य साहित्य' का मुख्य उद्देश्य श्री स्वामी सत्यानंद जी महाराज के लोक कल्याणकारी साहित्य का व्याख्यात्मक शैली से प्रकाशन करना है।
2. 'सत्य साहित्य' का दूसरा उद्देश्य है उस साधना पद्धति का प्रचार और प्रसार करना जो सच्ची और सरल है, वेदशास्त्र सम्मत है और भावुक साधकों के अनुभव में आ चुकी है।

नियम

1. 'सत्य साहित्य' हर तीन माह में प्रकाशित होगा।
2. 'सत्य साहित्य' में परम पूज्य स्वामी श्री सत्यानंद जी महाराज, परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज एवं परम पूज्य महाराज जी के प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य से सम्बन्धित विचार प्रकाशित होंगे।
3. 'सत्य साहित्य' के 'अनुभूतियाँ' विभाग में गुरुजनों के सम्पर्क या परिचय में आए हुए साधकों के अपने अनुभव प्रकाशित होंगे।
4. 'सत्य साहित्य' के 'पत्र और उत्तर' विभाग में साधकों के पत्र और उनके उत्तर उनके पत्रों के आधार पर प्रकाशित होंगे।
5. 'सत्य साहित्य' में गुरुजनों के साहित्य और सिद्धान्तों से सम्बन्ध रखने वाली कविताएँ, गीत आदि भी प्रकाशित हो सकेंगे।
6. 'सत्य साहित्य' में प्रकाशनार्थ आई हुई सामग्री को शीघ्र या विलम्ब से प्रकाशित करना श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली, के अधीन होगा।
7. आवश्यकतानुसार नियमों में परिवर्तन, परिवर्धन हो सकेगा, किन्तु ध्येय वही रहेगा जो इन नियमों से प्रकट है।■

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यनन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव इंडिया, ए–27, नारायणा औद्योगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

आर. एन. आई. न०: 6642